दो वर्षा गीत

(1)

बरसो श्यामल घन कजरारे, धरती प्यासी है।
हर प्राणों में तृष्णा जागी,
हर आँखों से निंदिया भागी,
कृषकों के मुख मंडल पर छा रही उदासी है।
सूख रही खेतों में मोड़ी,
राह तके बैलों की जोड़ी,
आज जरूरत अमिय कणों की अच्छी खासी है।
हर खेतों में चले रोपनी,
जगें नयन में सपन अगहनी,
गाँवों के चौपालों पर छा रही उदासी है।
प्लावित हो हर क्यारी-क्यारी,
झूमें गायें कृषक कुमारी,
हर दिन हर उर की आशाएँ होती बासी है।
हर कंठों में गम का पहरा,
बीता जाता वक्त सुनहरा,
बढ़ता जाता कर्ज गले में गहरी फाँसी है।

—गणेश 'चंचल'
ग्राम + पो.- सोहा, सोनबर्षा राज
जिला - सहरसा (बिहार)
Pin- 852129

(2)

मधुर-मधुर बरसो पावस घन।
धीरे-धीरे, उमड़-उमड़ कर करके,
मेघ रन्ध्र में भर मादक स्वर,
श्यामाधर पर मधुर हास को-
द्योतित कर अम्बर का अन्तर,
बजे बाँसुरी अमराई में,
झिंगुर की वीणा का मृदु स्वन,
सिहर-सिहर बरसो पावस घन।
नगर-नगर में, डगर-डगर में,
गाँव-गाँव, आँगन, घर-घर में,
खेत-खेत, वन-वन, उपवन में,
नीड़-नीड़, कोटर-कोटर में,
भीगे तृषित धरा का आँचल,
चातक का प्यासा मन-शिविर,
बून्द-बून्द बरसो पावस घन।
मुर्झाई वल्लरियाँ, द्रुम-दल,
में फूटें कलियाँ, नव कोपल,
बिछ जाये इस मरुस्थल पर,
दूब मखमली श्यामल-श्यामल,

कृषक लगाये तान, 'सखी री-
आया सावन सर्व सुहावन',
झमक-झमक बरसो पावस घन।
सिर पर रखली लिए गगरिया,
तपते पथ पर चली गुजरिया,
प्यासे परदेशी खातिर, जल-
भरने ओढ़े लाल चुनरिया,
बरसो जलन मिटाओ पथ की,
घर आया परदेशी साजन,
मचल-मचल, बरसो पावस घन।

गणेश 'चंचल'
ग्राम + पो० - सोहा, सोनवर्षाराज
जिला - सहरसा (बिहार)
पिन - 852129

मो० - 9431413598